# प्राचीन लिपि वर्णमाला

*सूर्य मूर्ति :—*
सौगल, ललितपुर

**श्री ५ को सरकार**
पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल

पुरातत्त्व प्रकाशन माला—३

# प्राचीन लिपि वर्णमाला

पं० शङ्करमान राजवंशीद्वारा
सम्पादित

प्रकाशक :
श्री ५ को सरकार, पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल

# दुई शब्द

नेपाल अधिराज्यभित्र विभिन्न प्राचीन लिपिमा लेखिएका सामग्री भएका कीर्ति-स्तम्भ, सुवर्ण-पत्र, ताम्र-पत्र, ताड़-पत्र, काष्ठ-पत्र, इष्टिका-पत्र, भुर्ज-पत्र, हस्तलिखित पुस्तक र अनेक कागजातहरू यत्र-तत्र प्रसस्त छरिएका पाइन्छन्। यी सव महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्रीहरूको अन्वेषण, अध्ययन र अनुसन्धान निमित्त प्राचीन लिपिको ज्ञान हुनु अत्यावश्यक छ। यसै अभावको पूर्तिका निमित्त विभिन्न लिपि माला प्रकाश गर्ने तर्जुमा गरिएको हो। आशा छ, यी पुस्तिकाहरू पुरातत्त्व प्रेमी सवै महानुभाव र विद्यार्थीहरूका लागि उपयोगी सिद्ध हुने छन्।

**श्री ५ को सरकार**
पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
**नेपाल**
२०१७ आषाढ़ ३०

**सत्यमोहन जोशी**
डाइरेक्टर

# विषय-सूची


| क्रम | विवरण | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | **नेवारी अक्षरको वर्णमाला** | |
| १ | स्वरवर्ण र व्यञ्जनवर्ण | १ |
| २ | स्वरसंयोगवर्ण र स्वरसंयोगमा विशेष | २ |
| ३ | ऋकारान्त व्यञ्जनवर्ण र यसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण | ३ |
| ४ | रसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण र मसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण | ४ |
| ५ | वर्गपञ्चमयुक्त व्यञ्जनवर्ण र रेफयुक्त व्यञ्जनवर्ण | ५ |
| ६ | मिश्रवर्ण र संख्या | ६ |
| ७ | जयप्रकाशको नामापत्र | ७ |
| | **रञ्जनाक्षरको वर्णमाला** | |
| ८ | स्वरवर्ण र व्यञ्जनवर्ण | ८ |
| ९ | स्वरसंयोगमा विशेष | ९ |
| १० | ऋकारान्त व्यञ्जनवर्ण र यसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण | १० |
| ११ | रसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण र मसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण | ११ |
| १२ | रेफयुक्त व्यञ्जनवर्ण र वर्गपञ्चमयुक्त व्यञ्जनवर्ण | १२ |

| क्रम | विवरण | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १३ | मिश्रवर्ण र संख्या | १३ |
| १४ | अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता | १४ |


## भुजिँमोल अक्षरको वर्णमाला


| | | |
|---|---|---|
| १५ | स्वरवर्ण र व्यञ्जनवर्ण | १५ |
| १६ | स्वरसंयोगवर्ण र स्वरसंयोगमा विशेष | १६ |
| १७ | यसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण र मिश्रवर्ण | १७ |
| १८ | संख्या | १८ |
| १९ | पञ्चरक्षा | १९ |


## उत्तरलिच्छवि अक्षरको वर्णमाला


| | | |
|---|---|---|
| २० | स्वरवर्ण र व्यञ्जनवर्ण | २० |
| २१ | स्वरसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण र स्वरसंयोगमा विशेष | २१ |
| २२ | यसंयुक्त व्यञ्जनवर्ण र मिश्रवर्ण | २२ |
| २३ | संख्या र पशुपतिको द्वितीय जयदेवको अभिलेख | २३-२४ |

| क्रम | विवरण | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | **परिशिष्ट** | |
| २४ | किरातलिपिको वर्णमाला | २५-२८ |
| | **मिथिलाक्षर वर्णमाला** | |
| २५ | स्वरवर्ण र व्यञ्जनवर्ण | २९ |
| २६ | स्वरसंयुक्त व्यञ्जन | ३० |
| २७ | संयुक्ताक्षरवर्ण | ३१ |
| २८ | संख्या | ३२ |

पाको कागतमा लेखिएका प्राचीन ग्रन्थमा

पाइने नेवारी अक्षरको

वर्णमाला

(स्वरवर्ण)

१ॐँ ॥ अ आ ४ ४ ४ उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ऩ ऐ ऑ ओ औं अः

१ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ऍ ऐ ऑ ओ औं अः

(व्यञ्जनवर्ण)

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

(स्वरसंयोगवर्ण)

क का कि की कु कू कें कै कों कौ कं कः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

[स्वरसंयोगमात्रा विशेष]

ग्ा ग्े ग्ै ग्ो ग्ौ ज्ञा ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ
ठ ठ ठे ठै ठो ठौ ण्ा ण्े ण्ै ण्ो ण्ौ
थ थ थे थै थो थौ ध्ा ध्े ध्ै ध्ो ध्ौ
श्ा श्े श्ै श्ो श्ौ त्ु फ्ु ज्ु भ्ु ग्ु ह्ु
ज्ू त्ू फ्ू भ्ू ग्ू ह्ू

ग्ा ग्े ग्ै ग्ो ग्ौ ज्ञा ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ
ठा ठे ठै ठो ठौ ण्ा ण्े ण्ै ण्ो ण्ौ
था थे थै थो थौ धा धे धै धो धौ
शा शे शै शो शौ तु फु जु भु गु हु
जू तू फू भू गू हू

[ ऋकारान्तव्यञ्जनवर्ण ]

कृ खृ गृ घृ ङृ चृ छृ जृ झृ ञृ
टृ ठृ डृ ढृ णृ तृ थृ दृ धृ नृ
पृ फृ बृ भृ मृ शृ षृ सृ हृ

कृ खृ गृ घृ ङृ चृ छृ जृ झृ ञृ
टृ ठृ डृ ढृ णृ तृ थृ दृ धृ नृ
पृ फृ बृ भृ मृ शृ षृ सृ हृ

[ संयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

क्ष स्व ग्य घ्र ङ्क च्छ ज्ञ म्य ञ्च
ट्ठ ण्ड ञ्ज ष्ठ ह्य त्थ द्ध ध्य न्य
प्य ल्ल व्य श्य म्य य्य च्य ल्य ष्ठ ष्य
स्य ङ्क ङ्क ञ्च

क्ष ख्व ग्य घ्र ङ्क च्छ ज्ञ न्य झ्य ञ्य
ट्ठ ड्ड ड्ढ ढ्ढ ण्य त्य थ्य द्ध ध्य न्य
प्य फ्य ब्य भ्य म्य य्य च्य ल्य ष्ठ ष्य
स्य ह्य श्च व्य

[ रसंयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

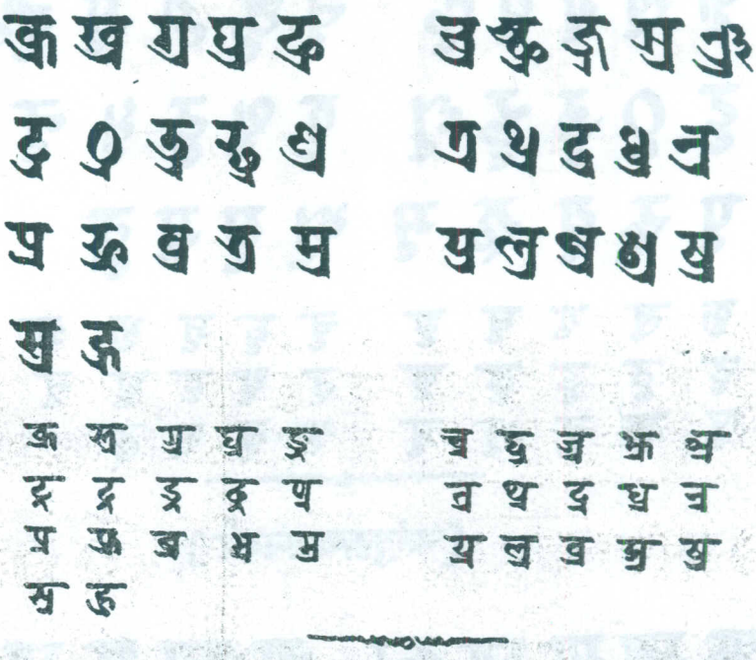

[ म्संयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

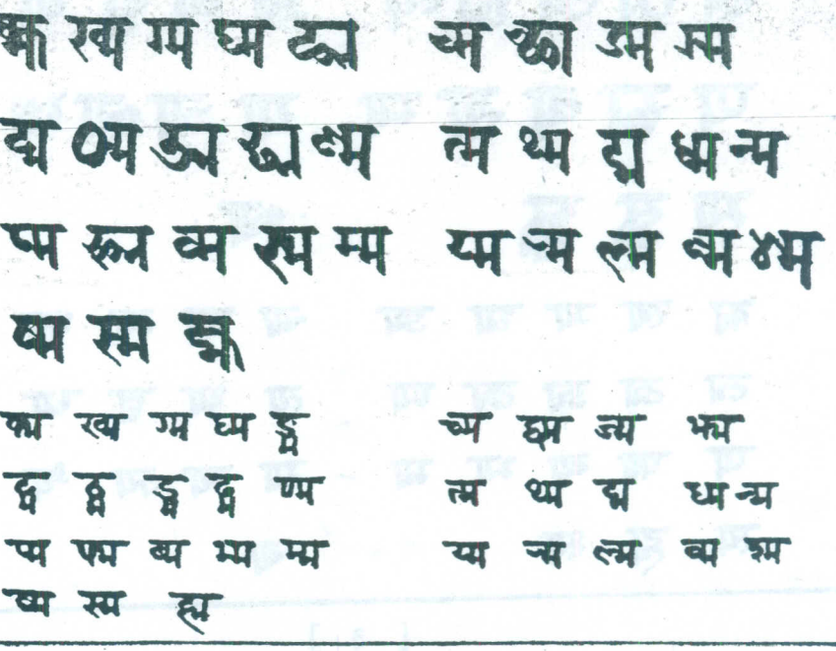

[ वर्गपञ्चमयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

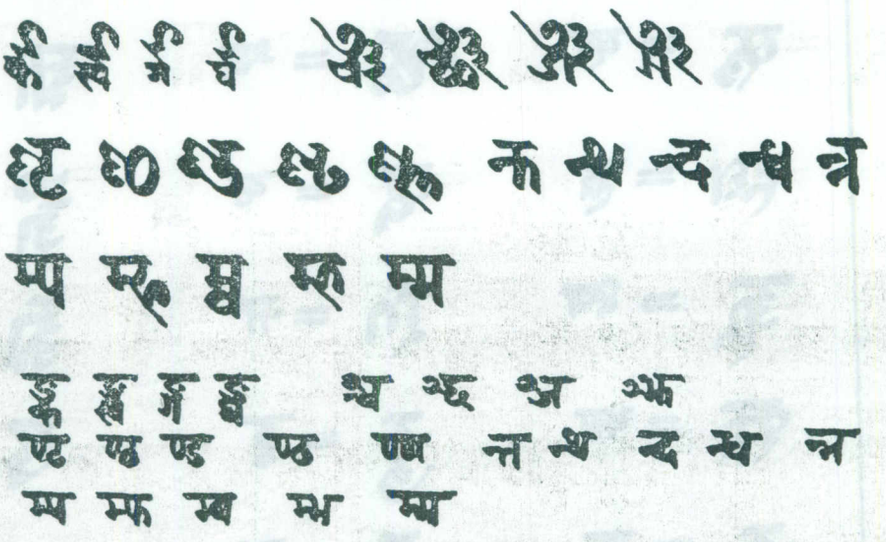

[ रेफयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

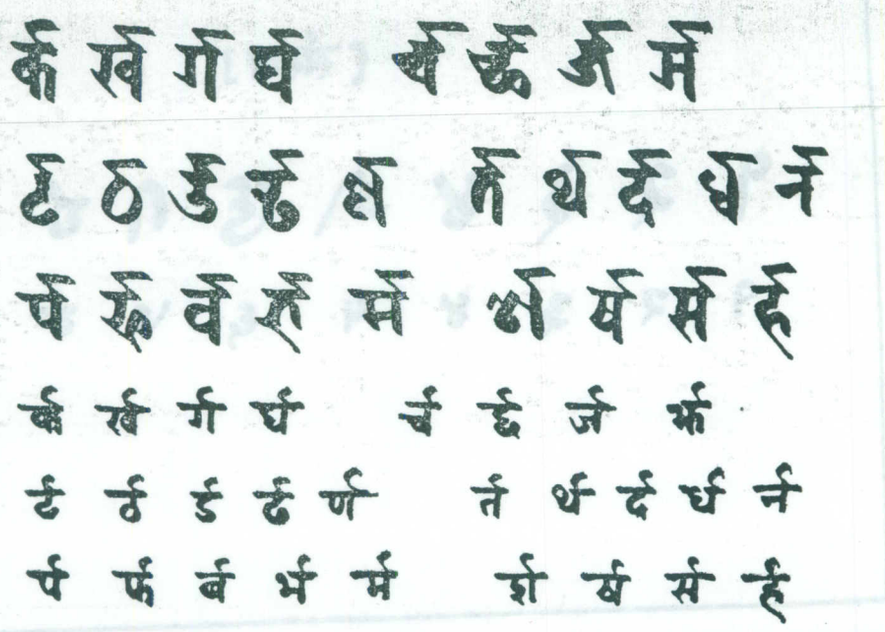

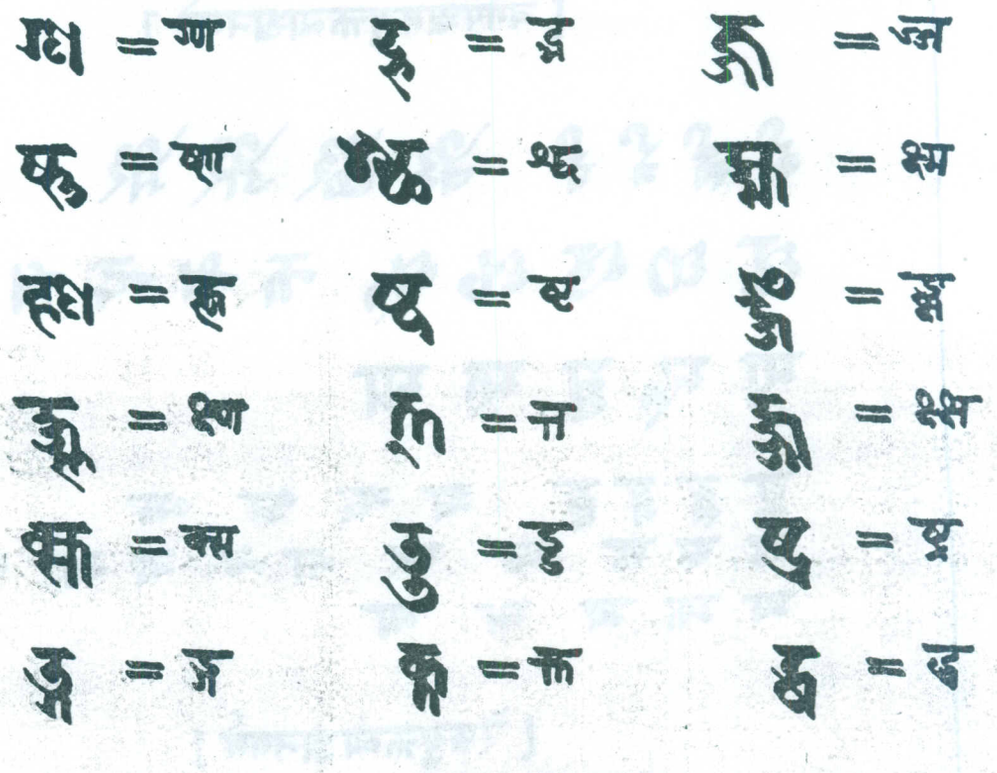
ण = ण
ङ्ग = ङ्ग
ल्ल = ल्ल
ष्ण = ष्ण
ष्ठ = ष्ठ
क्ष = क्ष
ह्म = ह्म
ष्ट = ष्ट
ह्न = ह्न
क्ष्ण = क्ष्ण
न्न = न्न
क्ष्म = क्ष्म
क्त = क्त
ट्ट = ट्ट
ष्ट्र = ष्ट्र
ज्ञ = ज्ञ
क्क = क्क
ड्ड = ड्ड

[संख्या]

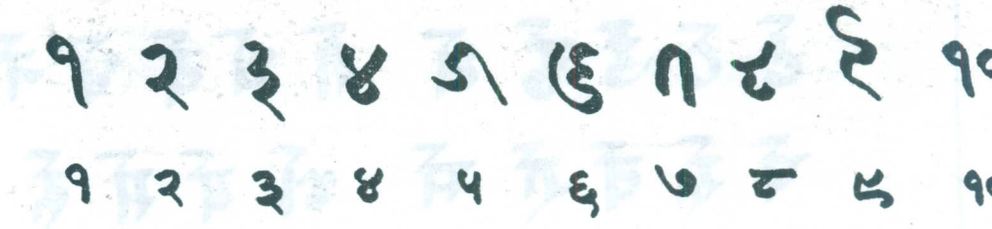
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

## जयप्रकाशको ताम्रपत्र

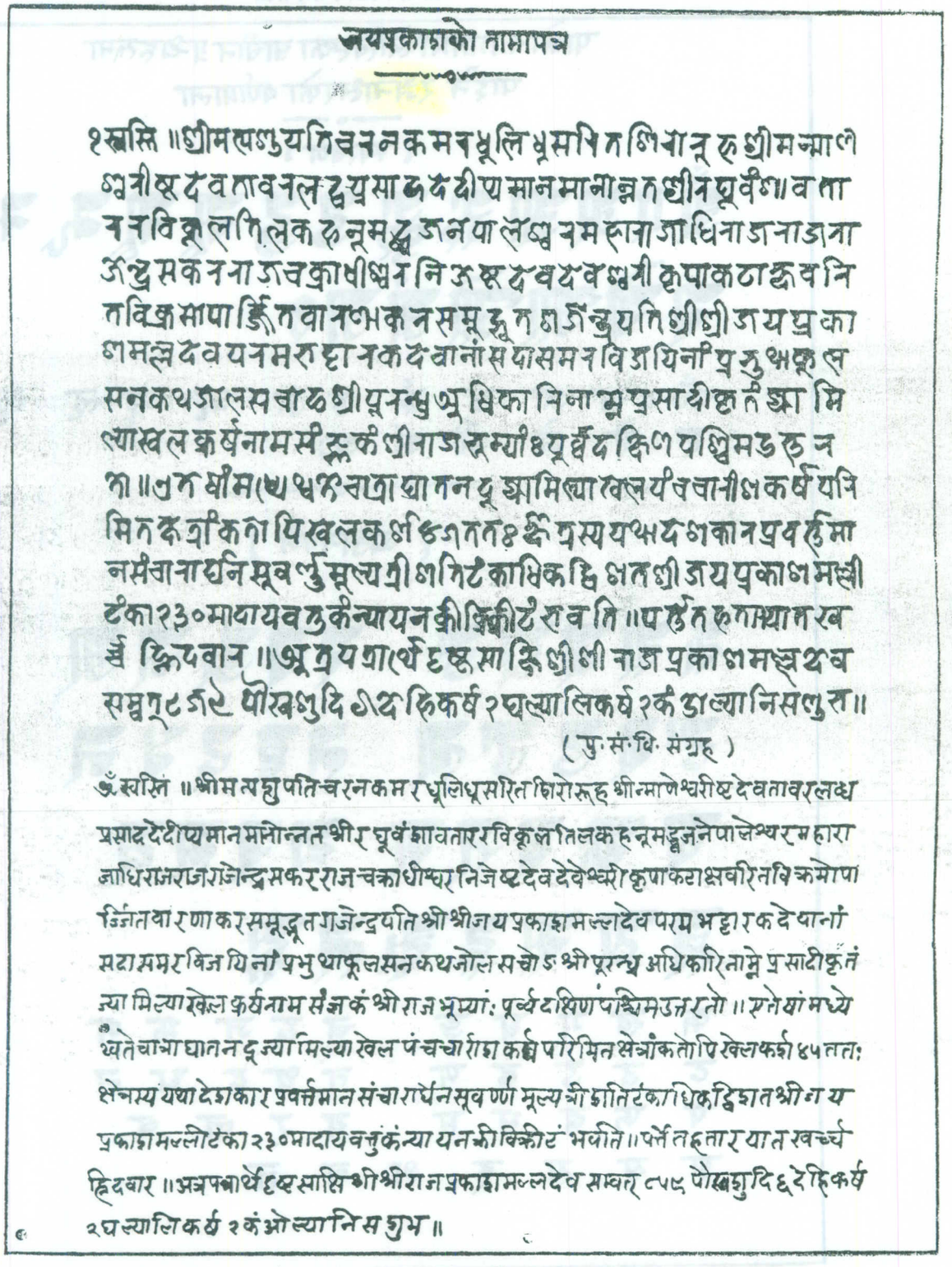

ॐ स्वस्ति ॥ श्रीमत्पशुपतिचरनकमलरेणुधूसरितशिरोरुह श्रीमन्नाणेश्वरीष्टदेवतावरलब्ध प्रसाददेदीप्यमानमनोन्नतश्रीरघुवंशावतारविकुलतिलकहनूमद्भुजनेपालेश्वरमहाराजाधिराजराजराजेन्द्रमकरराजचक्राधीश्वरनिजेष्टदेवदेवेश्वरीकृपाकटाक्षवीरविक्रमोपार्जितवारणकरसमूद्भूतगजेन्द्रपतिश्रीश्रीजयप्रकाशमल्लदेवपरमभट्टारकदेवानां सदासमरविजयिनां प्रभुथाफूलसनकथजोलसचोऽश्रीपूरन्धअधिकारिनामे प्रसादीकृतं ज्यामित्याखेलकर्षनाम संज्ञकं श्रीराजभूम्याः पूर्वदक्षिणपश्चिमउत्तरतो ॥ एतेषां मध्ये थतेचाभाघातनदूज्यामित्याखेलपंचचारीशकर्ह परिमितक्षेत्रांकतोपि खेलकर्श ४५ ततः क्षेत्रमयं यथादेशकारप्रवर्त्तमानसंचारार्घनसूवर्णा मूल्यश्रीशतिटंकाधिकद्विशतश्रीजय प्रकाशमल्लीटंका २३० मादायवनुकंन्यायनकीकिकीटं भवीते ॥ पर्मेतहतारयातखर्च्च हिदवार ॥ अत्रपक्षार्थेदक्षसाक्षिश्रीश्रीराजप्रकाशमल्लदेव सम्वत् ८५६ पौखशुदि ६ देहिकर्ष २घल्यालिकर्ष २कंओल्यानिसशुभ ॥

पाको कागतमा लेखिएका प्राचीन ग्रन्थहरूमा
पाइने रञ्जनाक्षरको वर्णमाला

[ स्वरवर्ण ]

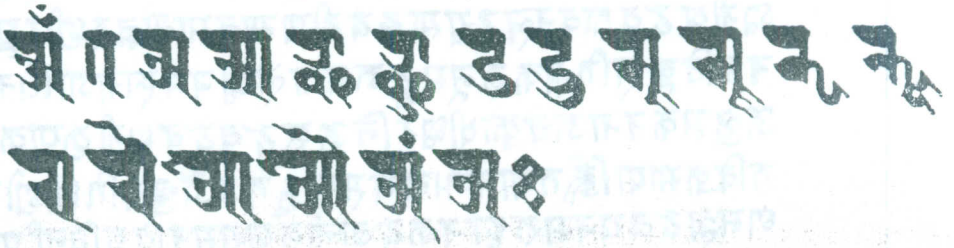

ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

[ व्यञ्जनवर्ण ]

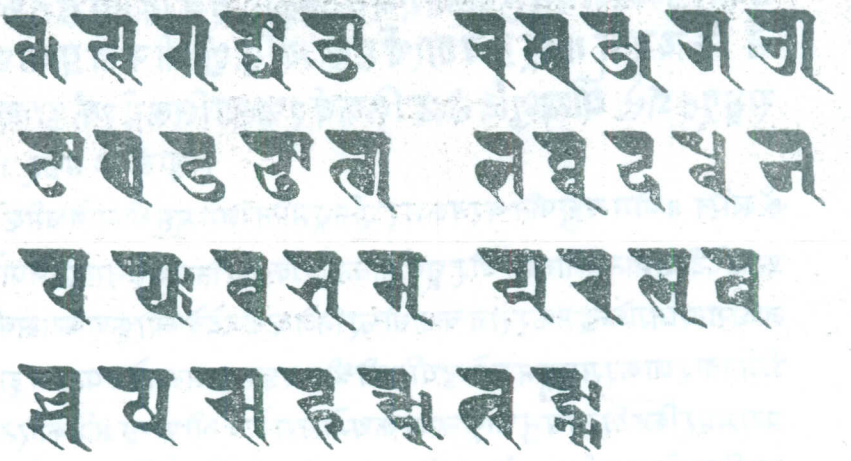

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

[ स्वरसंयोगमा विशेष ]

गा आ ढा णा था धा शा
गे ऐ ठे णे थे धे शे
गै ऐ ठै णै थै धै शै
गो ओ ढो णो थो धो शो
गौ औ ठौ णौ थौ धौ शौ
रु रू

[ऋकारान्तव्यञ्जनवर्ण]

[यसंयुक्तव्यञ्जनवर्ण]

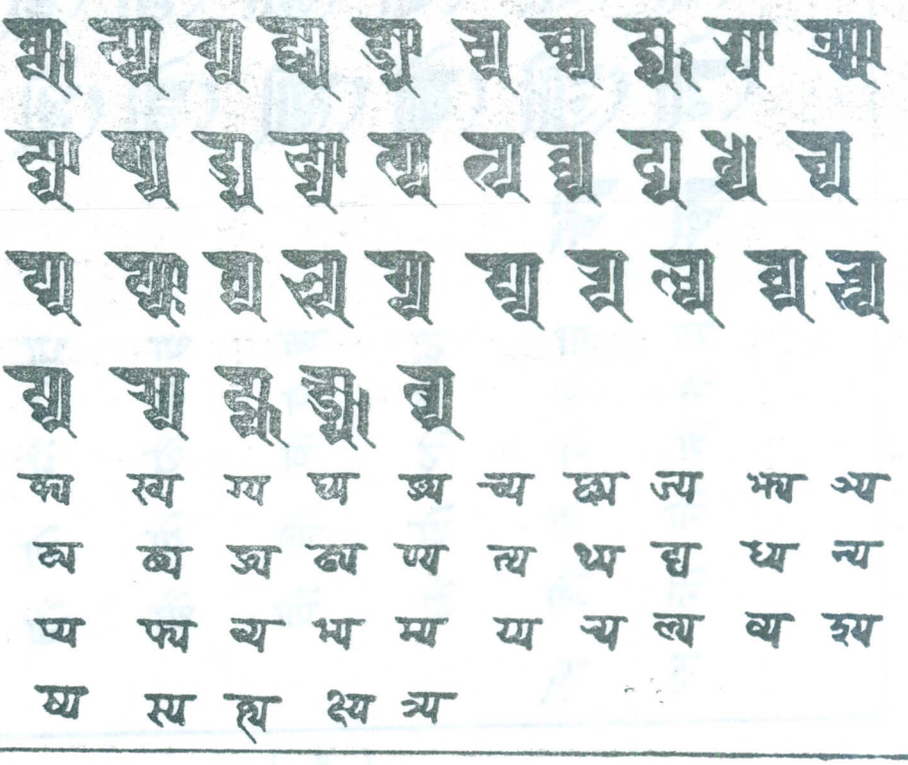

[ संयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

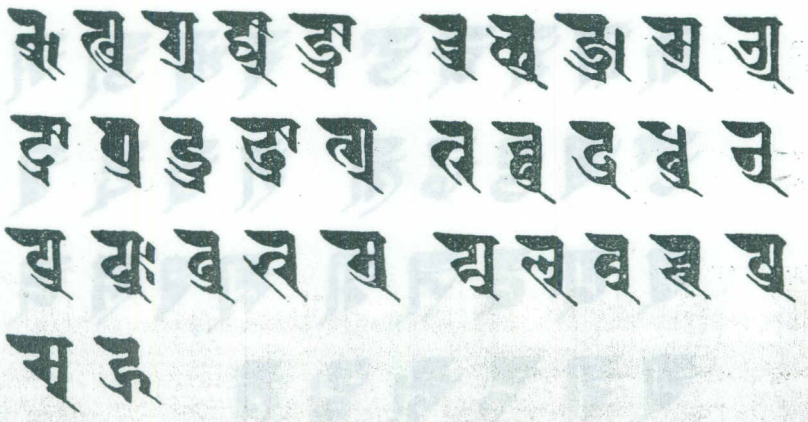

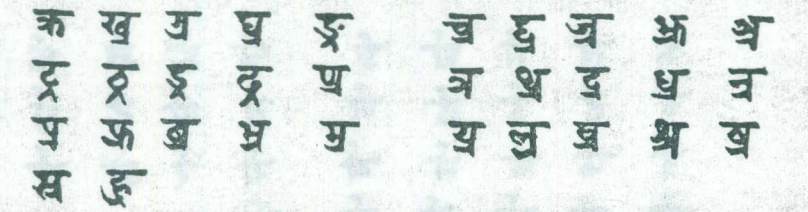

[ संयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

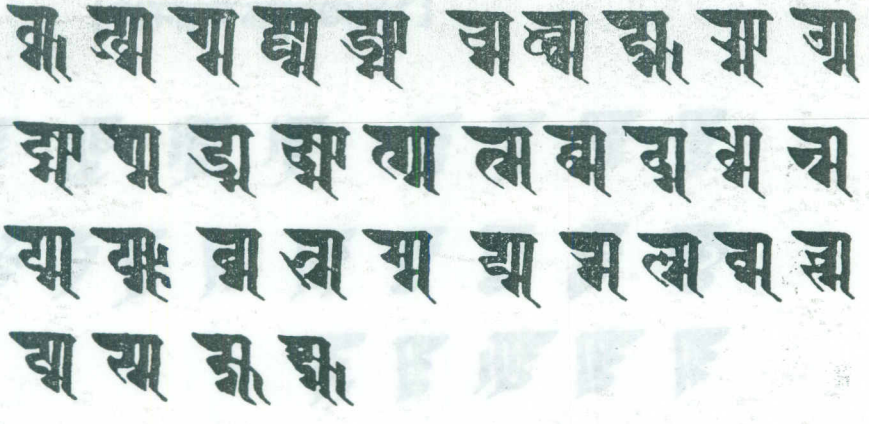

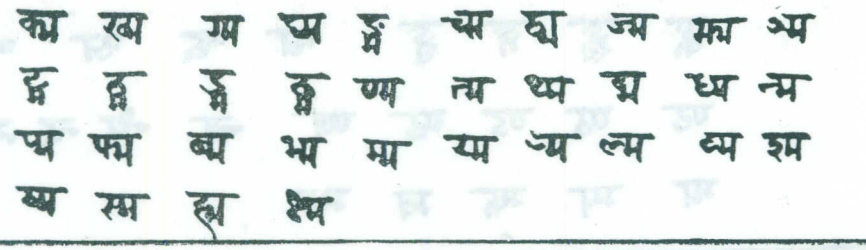

[ रेफयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

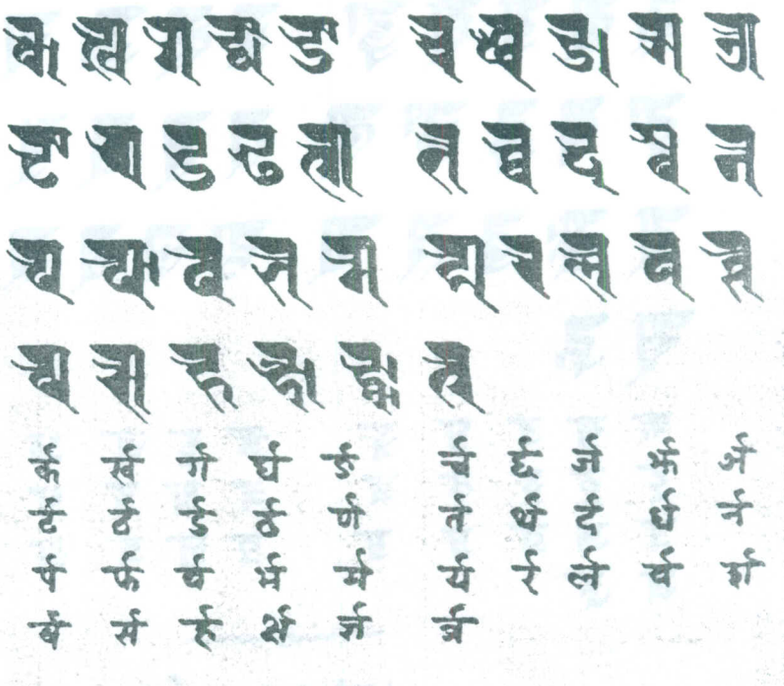

[ वर्गपञ्चमयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

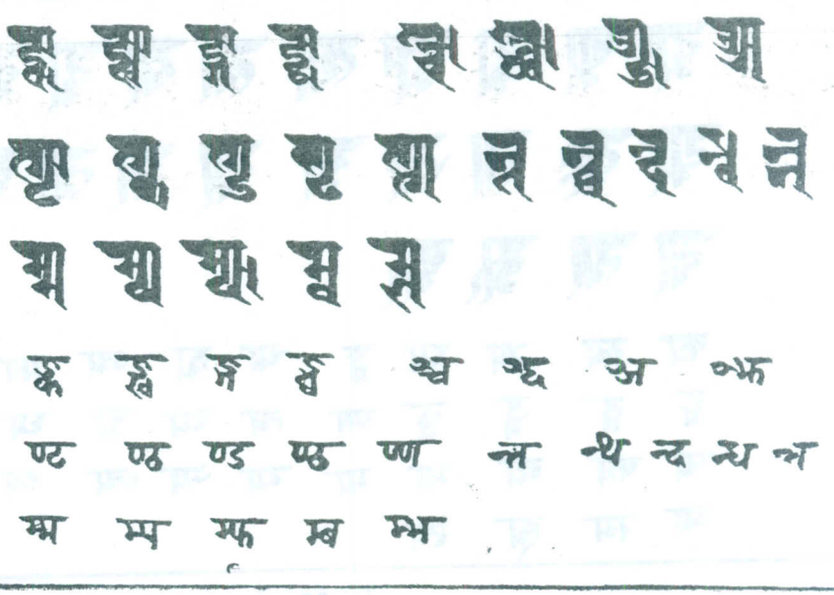

[ मिश्रवर्ण ]

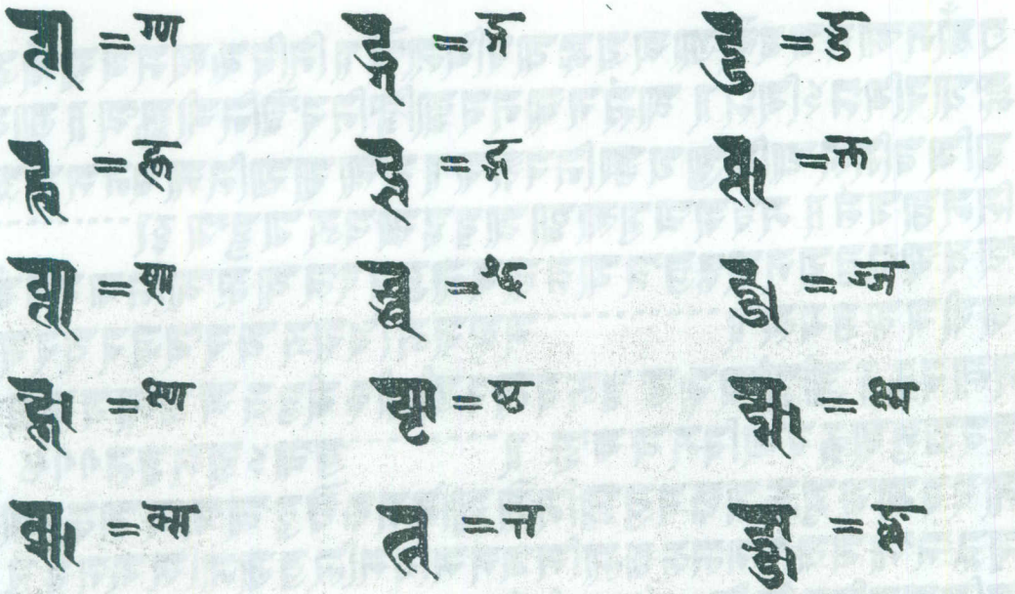


[ संख्या ]

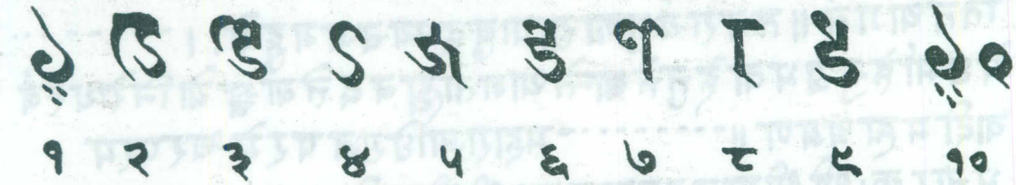

## अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता

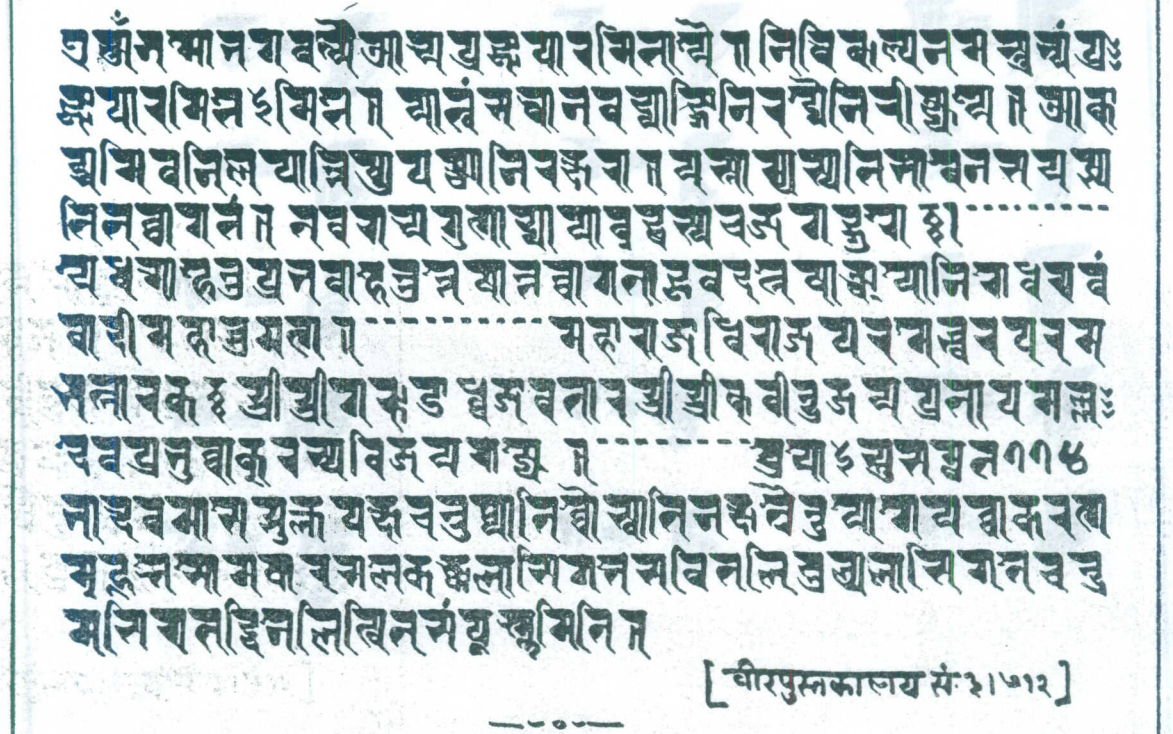

[वीरपुस्तकालय सं० १।७१२]

ॐनमो भगवत्यै आर्य प्रज्ञापारमितायै ॥ निर्विकल्पनमस्तुभ्यं प्रज्ञापारमिते ऽमिते ॥ यात्वं सर्वानवद्याङ्गि निरयै निरीक्षये ॥ आकाशमिव निर्लेपान्निष्प पञ्चानिरक्षरा ॥ यस्ताम्यस्मति भावेन सयस्य तितथागतं ॥ तवरार्य गुणाद्याया बुद्धस्य चजगद्गुरोः । ..... येधर्महेतु प्रभवा हेतुन्तेषान्तेथागताह्यवदत्तेया श्चयोनिरोधएवं वादी महाश्रमण ॥ ..... महाराजाधिराज परमेश्वरपरम भट्टारकः श्री श्रीगरुड ध्वजावतार श्रीश्री कवीन्द्र जय प्रताप मल्ल देव प्रभु थाकुरस्य विजयराज्ये ॥ ..... श्रेयोऽस्तुसम्वत ७७४ भाद्रव मासे शुक्ल पक्षचतुर्थ्यातिथौ स्वातिनक्षत्रेन्द्र योगे यथाकरण मुहूर्ते सोमवारसलेकर्कलासिगते सवितलितुल्यलासिगते चन्द्रमसि एतद्दिने लिखितसंपूर्णमिति ॥

नाडपत्रमा लेखिएका प्राचीन ग्रन्थमा पाइने
भुजिँमोल अक्षरको वर्णमाला

( स्वरवर्ण )

ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

[ व्यञ्जनवर्ण ]

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह क्ष त्र ज्ञ

[स्वरसंयोगवर्ण]

कं की किं की कु कू कं के का कौ कँ कः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

[ स्वरसंयोगमाविशेष ]

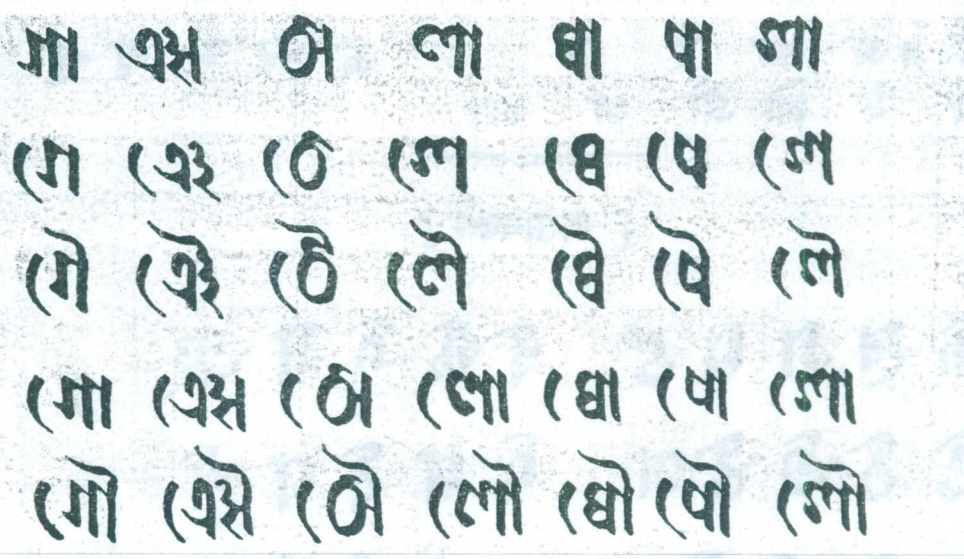

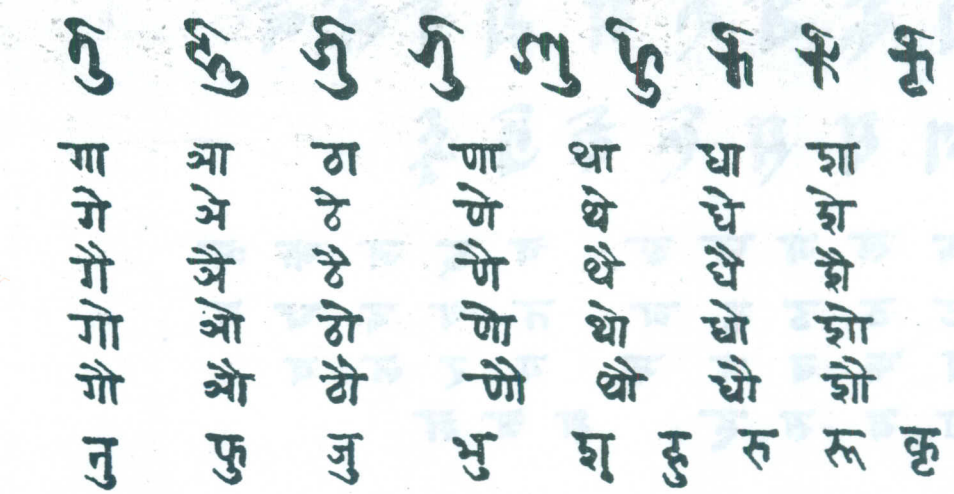

गा आ ठा णा था धा शा
गे ऐ ठे णे थे धे शे
गै ऐ ठै णै थै धै शै
गो ओ ठो णो थो धो शो
गौ औ ठौ णौ थौ धौ शौ
नु फु जु भु श्र हु रु रू कृ

[ यसंयुक्तव्यञ्जनवर्ण ]

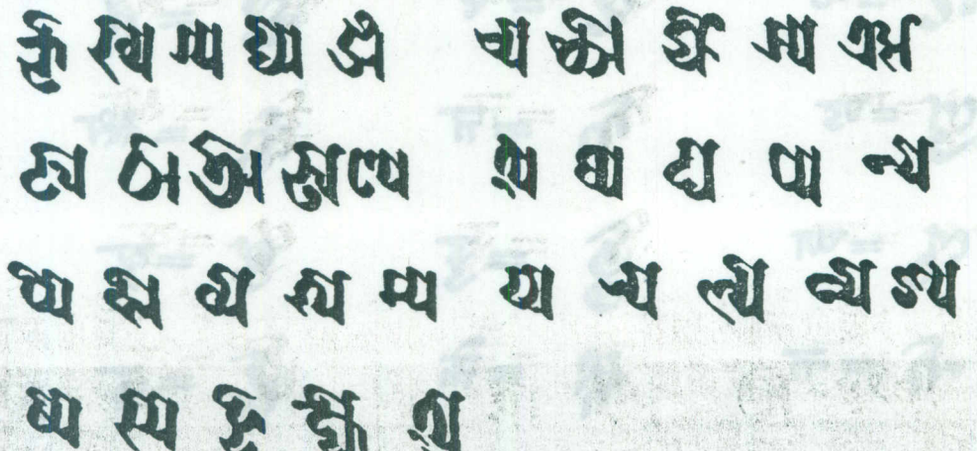

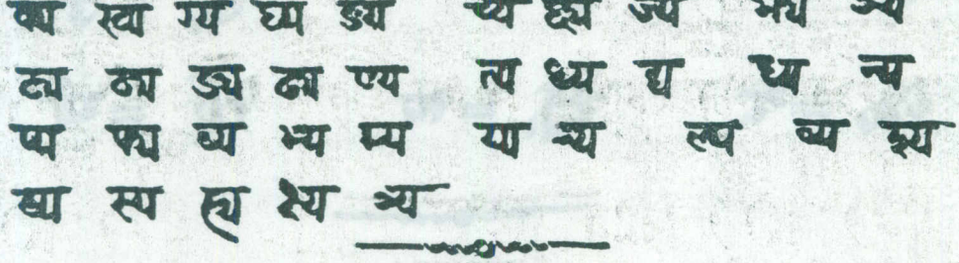

[ मिश्रवर्ण ]

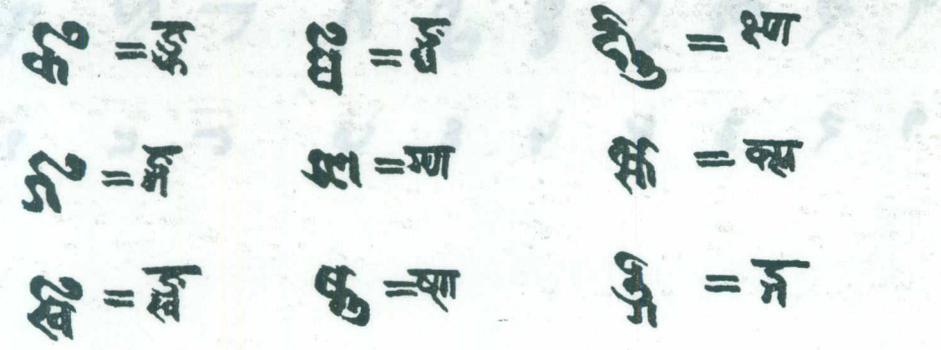

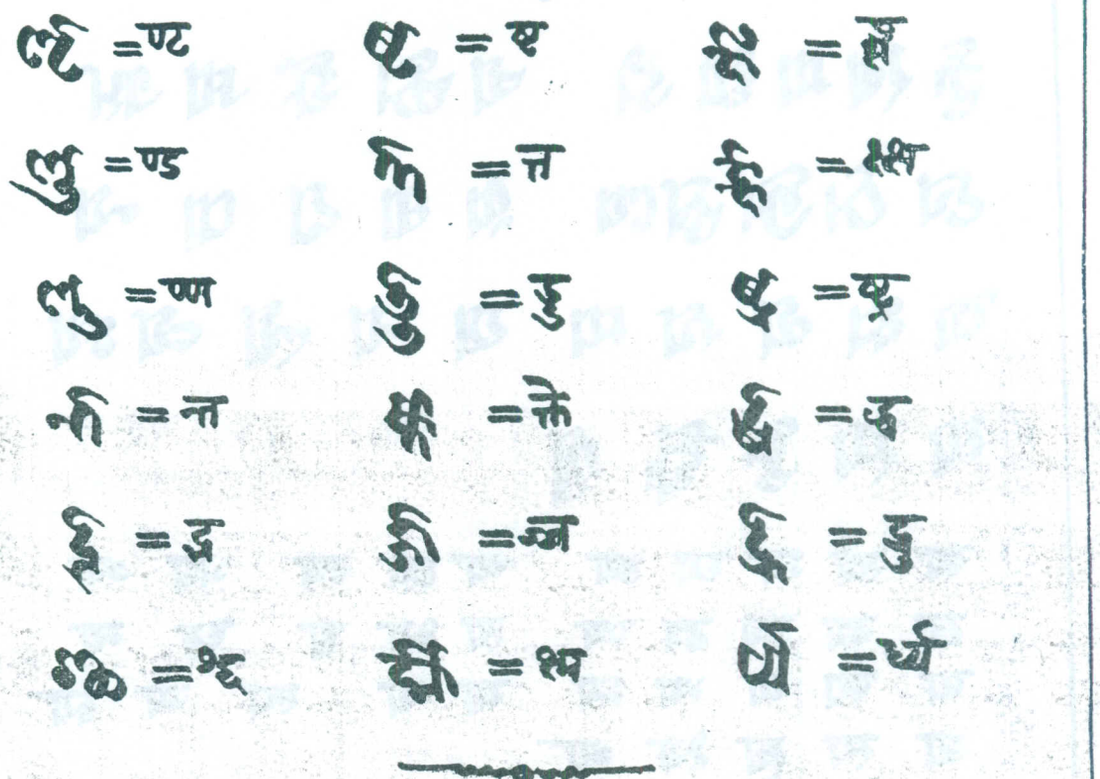


[संख्या]

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

## पञ्चरक्षा

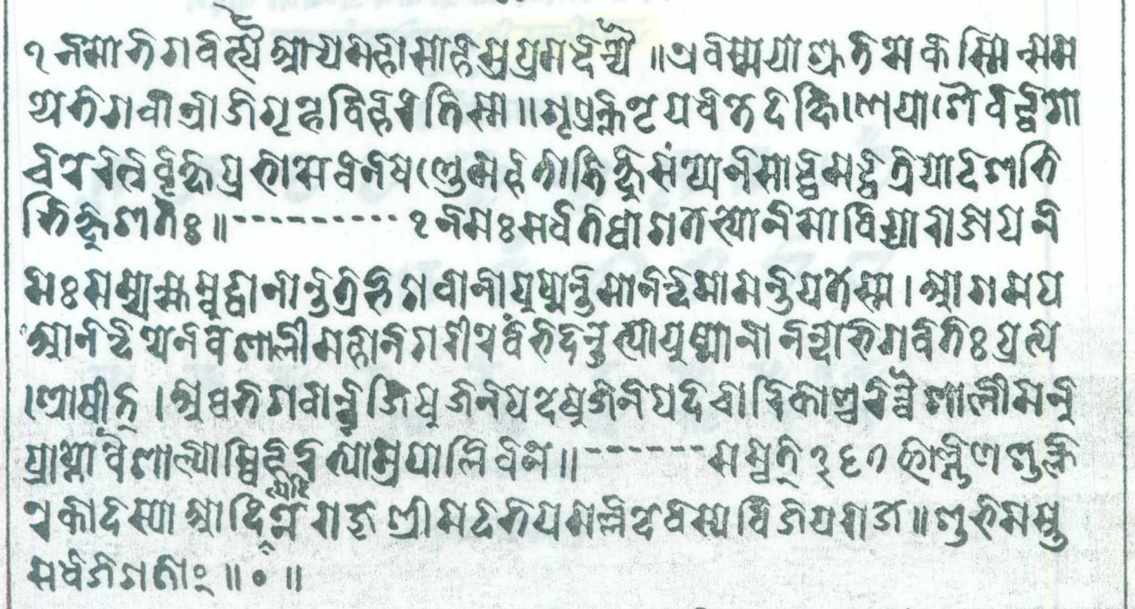

[ वीरपुस्तकालय सं॰ १। ३६७ ]

ॐ नमो भगवत्यै आर्यमहासाहस्रप्रदर्त्यै ॥ एवमया श्रुतमेकस्मिन्समये भगवान्राजगृहे विहरतिस्म ॥ गृध्रकूटे पर्वते दक्षिणेपार्श्वे बद्धगोचरे रत्नवृक्षप्रभासे वनषण्डे महताभिक्षुसंघेनसार्द्धमर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः ॥ ---------- ॐ नमः सर्वतथागतेभ्यो नमो विद्याराज्ञायनमः सम्यक्संबुद्धानान्तत्र भगवानायुष्मन्तमानन्दमामन्त्रयतेस्म । आगमयआनन्दयेनवैशाली महानगरीरेवं भदन्तेत्यायुष्मानानन्दोभगवतः प्रत्यश्रोषीत् । अथ भगवान्वृजिषु जनपदेषु जनपदचारिकाञ्चरन्वैशालीमनुप्राप्तोवैशाल्यामिहरत्यामुपालिवने ॥ ---- संवत् ३६७ फाल्गुण शुक्ल रेकादस्यामादित्यदिने राज्ये श्रीमदभयमल्लदेवस्य विजयराजे ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ ० ॥

ताडपत्रमा लेखिएका प्राचीन ग्रन्थमा पाइने
उत्तरलिच्छवि अक्षरको वर्णमाला

[स्वरवर्ण]

ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

ॐ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

[व्यञ्जनवर्ण]

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व श
ष स ह क्ष त्र ज्ञ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व श
ष स ह क्ष त्र ज्ञ

टिप्पणी—अघिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई गुप्तालिपि र पछिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई कुटिला लिपि भनी व्यवहार गरिआएको थियो। अब देखि गुप्तालिपिलाई पूर्वलिच्छविलिपि र कुटिला लिपिलाई उत्तरलिच्छविलिपि भन्ने भनी श्री ५ को सरकार पुरातत्त्व तथा संस्कृति विभागबाट निर्णय भएकोले यहाँ कुटिला भनिलाई उत्तरलिच्छवि अक्षर भनी लेखिएको

[स्वरसंयुक्तव्यञ्जनवर्ण]

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

[स्वरसंयोगप्रविशेष]

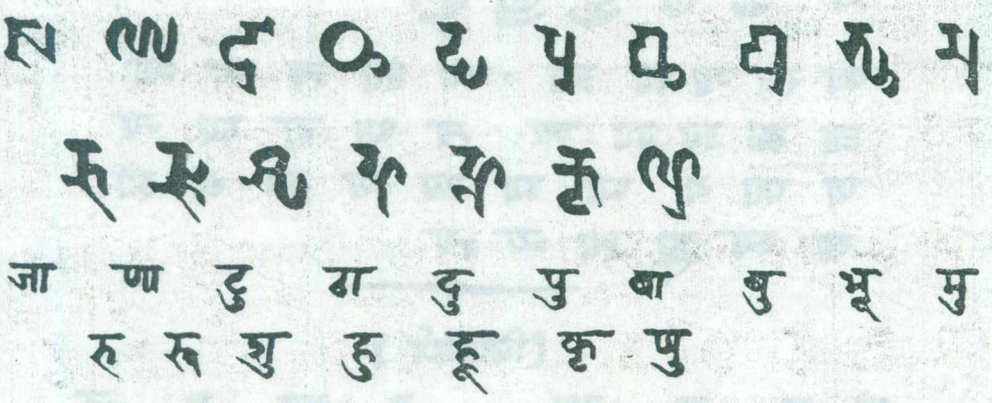

जा ण्ण डु ढा दु पु बा बु भू मु

रु रू शु हु हू कृ पु

[ यसंयुक्तव्यअनवर्ण]

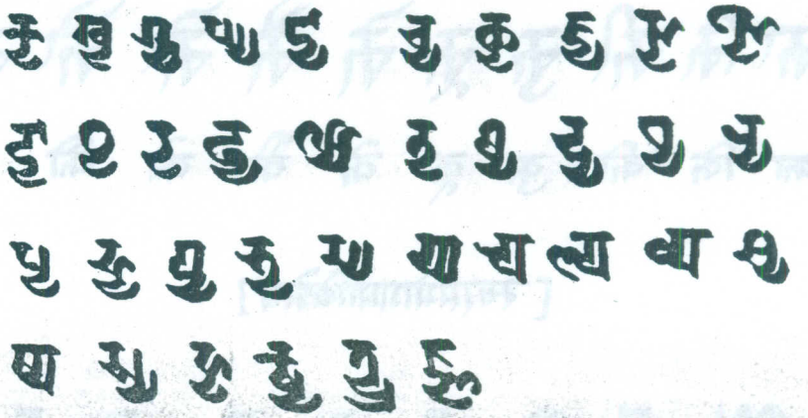

क्त क्ष क्ल क्व क्य क्र क्ग क्ह क्म क्ष्म
ट्ट ट्ठ ट्र ट्ड ट्ढ ट्ह ट्ठ ट्ड ट्य ट्ब
ध्य ध्ग ध्म ध्र ध्व ण्ण त्त त्य त्र त्व
त्स त्थ त्ह त्ष त्म त्ण

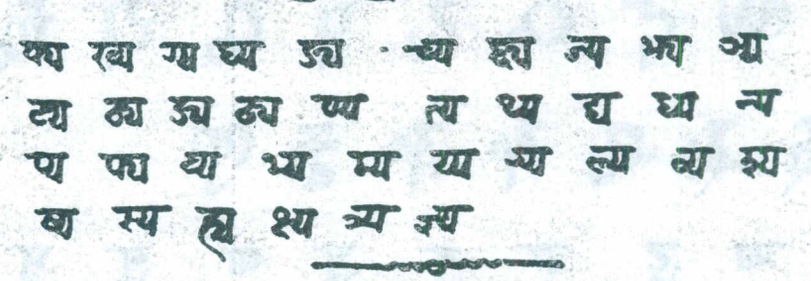

क्य ख्य ग्य घ्य ङ्य च्य ज्ञ ञ्य भ्य थ्य
ट्य ठ्य ड्य ढ्य ण्य त्य थ्य द्य ध्य न्य
प्य फ्य ब्य भ्य म्य य्य र्य ल्य व्य श्य
ष्य स्य ह्य क्ष्य त्र ज्ञ

---

[ मिश्रवर्ण ]

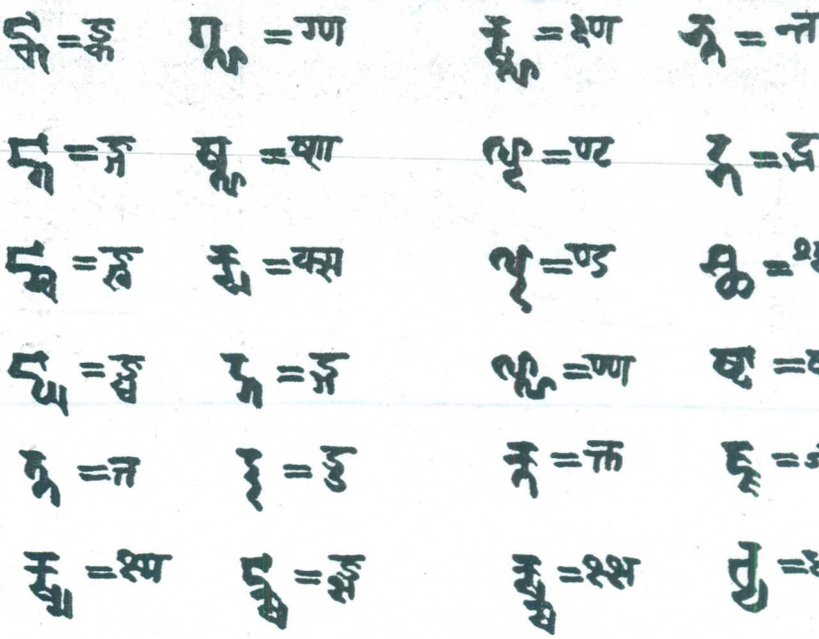

क्क=क्क ग्ण=ग्ण क्ष्ण=क्ष्ण न्न=न्न
ञ्ज=ञ्ज ष्ण=ष्ण ट्ट=ट्ट द्र=द्र
ह्म=ह्म क्स=क्स ड्ड=ड्ड श्च=श्च
द्ध=द्ध ञ्ज=ञ्ज ण्ण=ण्ण ष्ट=ष्ट
न्न=न्न ड्ड=ड्ड क्त=क्त ज्ञ=ज्ञ
क्ष्य=क्ष्य द्ध्य=द्ध्य क्ष्म=क्ष्म र्ध्य=र्ध्य

[संख्या]

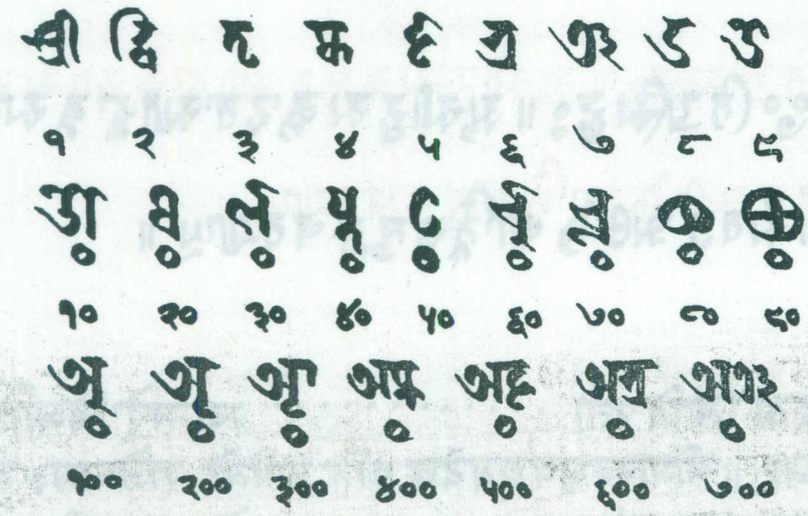

पशुपतिको द्वितीय जयदेवको
अभिलेखबाट

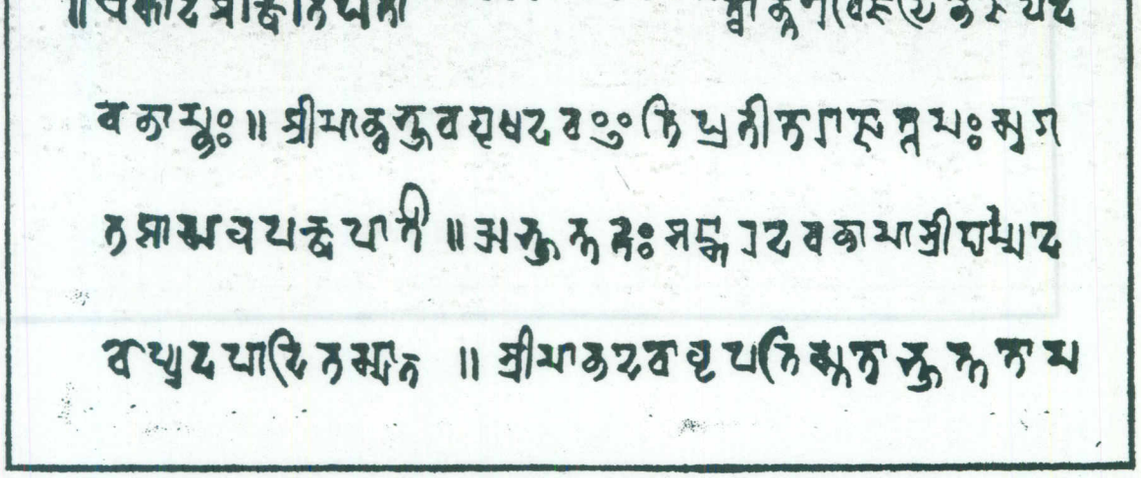

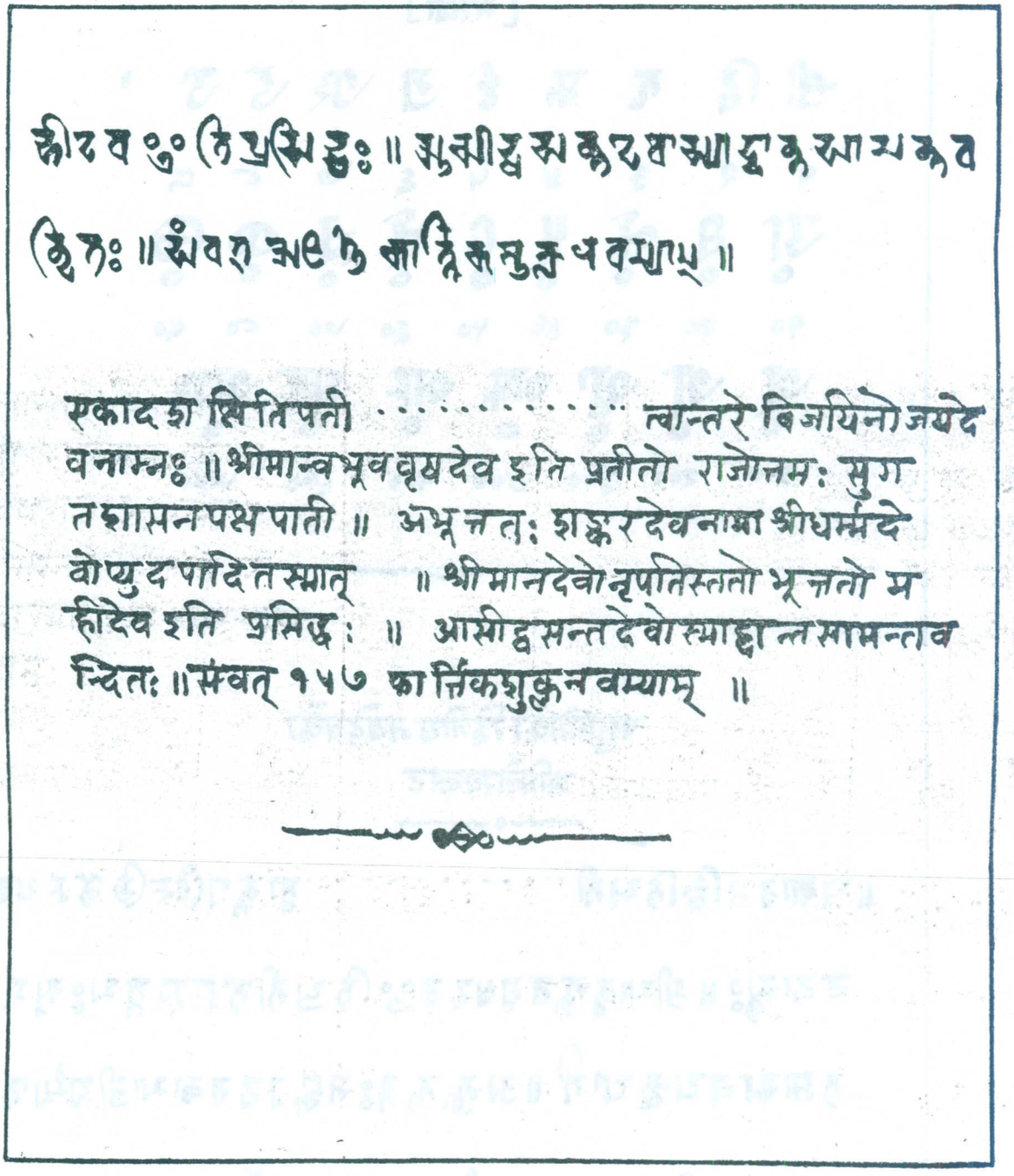

एकादश क्षितिपतौ ..... त्वान्तरे विजयिनो जयदेव नाम्नः ॥ श्रीमान्बभूव वृषदेव इति प्रतीतो राजोत्तमः सुगत शासनपक्षपाती ॥ अभूत्ततः शङ्करदेवनामा श्रीधर्म्मदेवोप्युदपादितस्मात् ॥ श्रीमानदेवो नृपतिस्ततो भूत्ततो महीदेव इति प्रसिद्धः ॥ आसीद्वसन्तदेवोस्माद्धान्तसामन्तवन्दितः ॥ संवत् १५७ कार्त्तिकशुक्लनवम्याम् ॥

[ परिशिष्ट ]

## किरातलिपिकोवर्णमाला

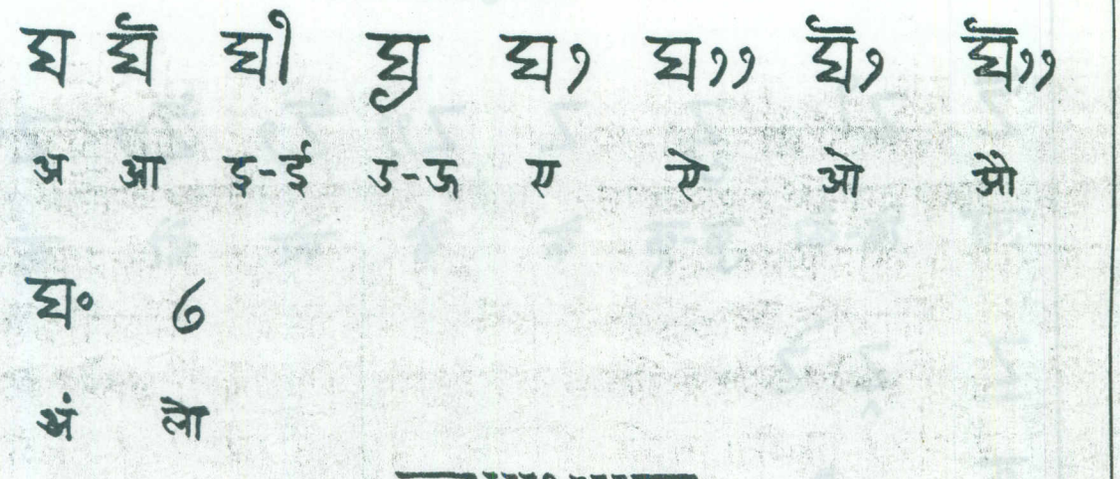

अ आ इ-ई उ-ऊ ए ऐ ओ औ



अं ला

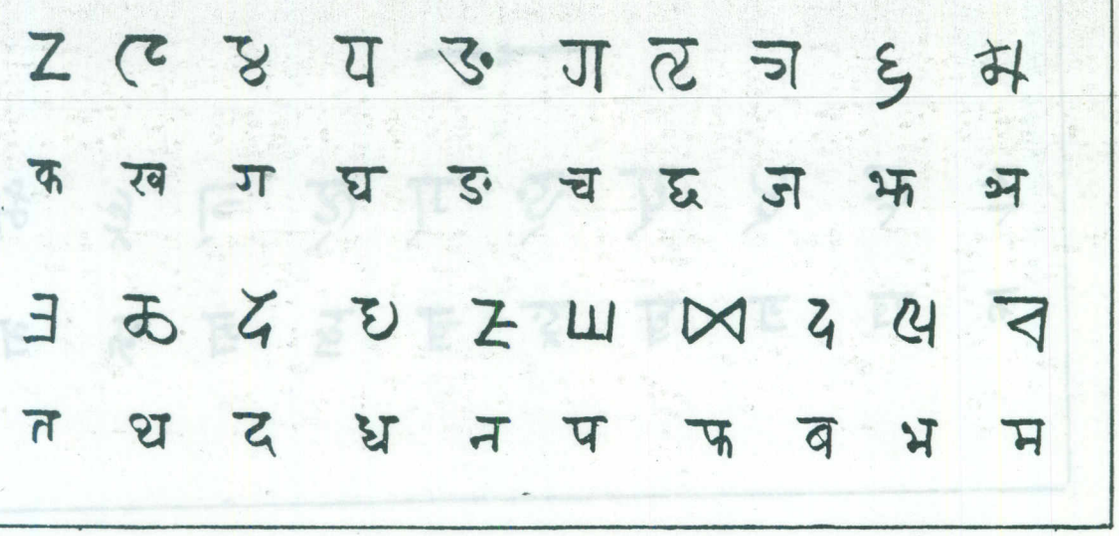

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ



त थ द ध न प फ ब भ म

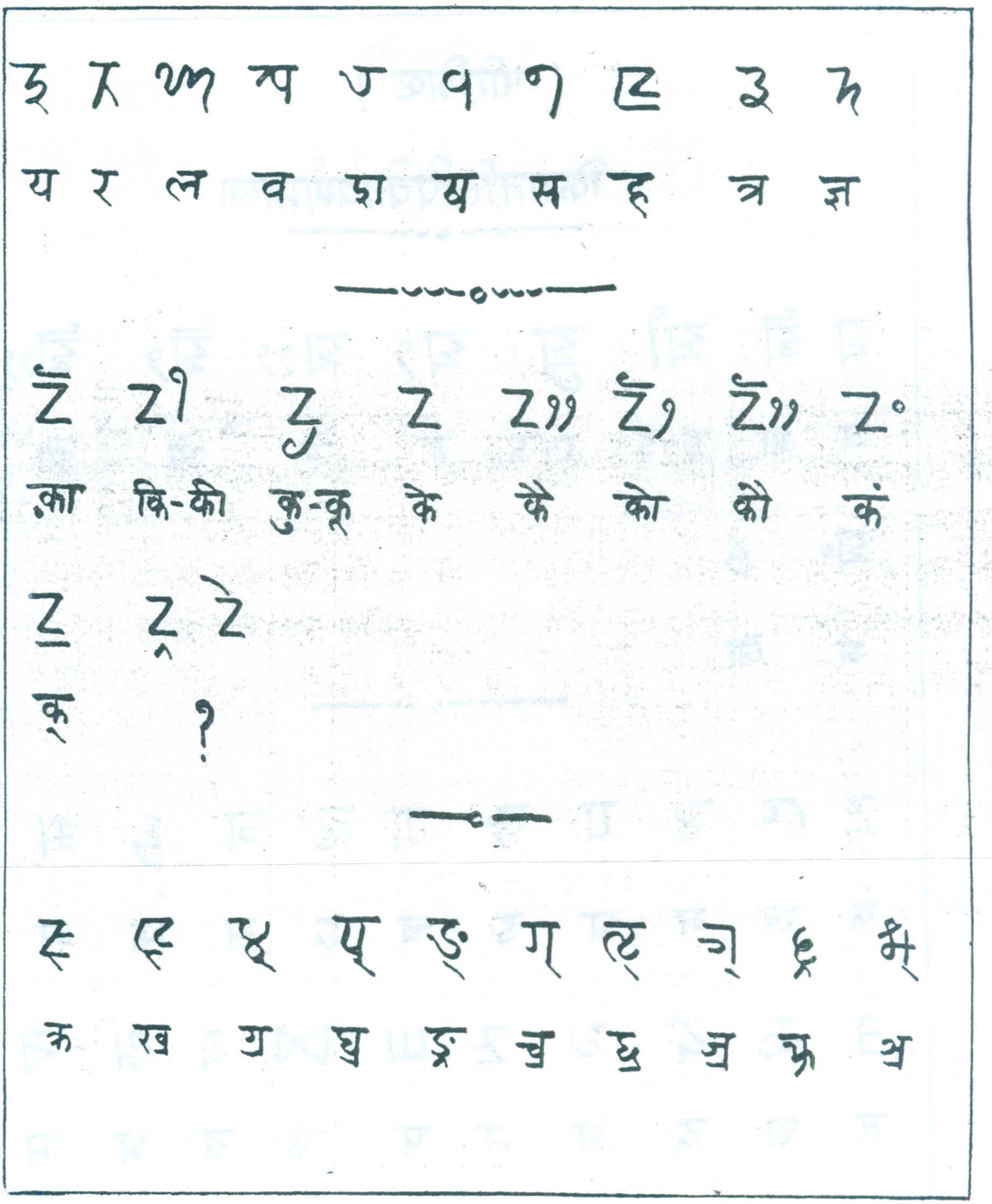
य र ल व श ष स ह त्र ज्ञ
क्का कि-की कु-कू के कै को कौ कं
क्
?
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

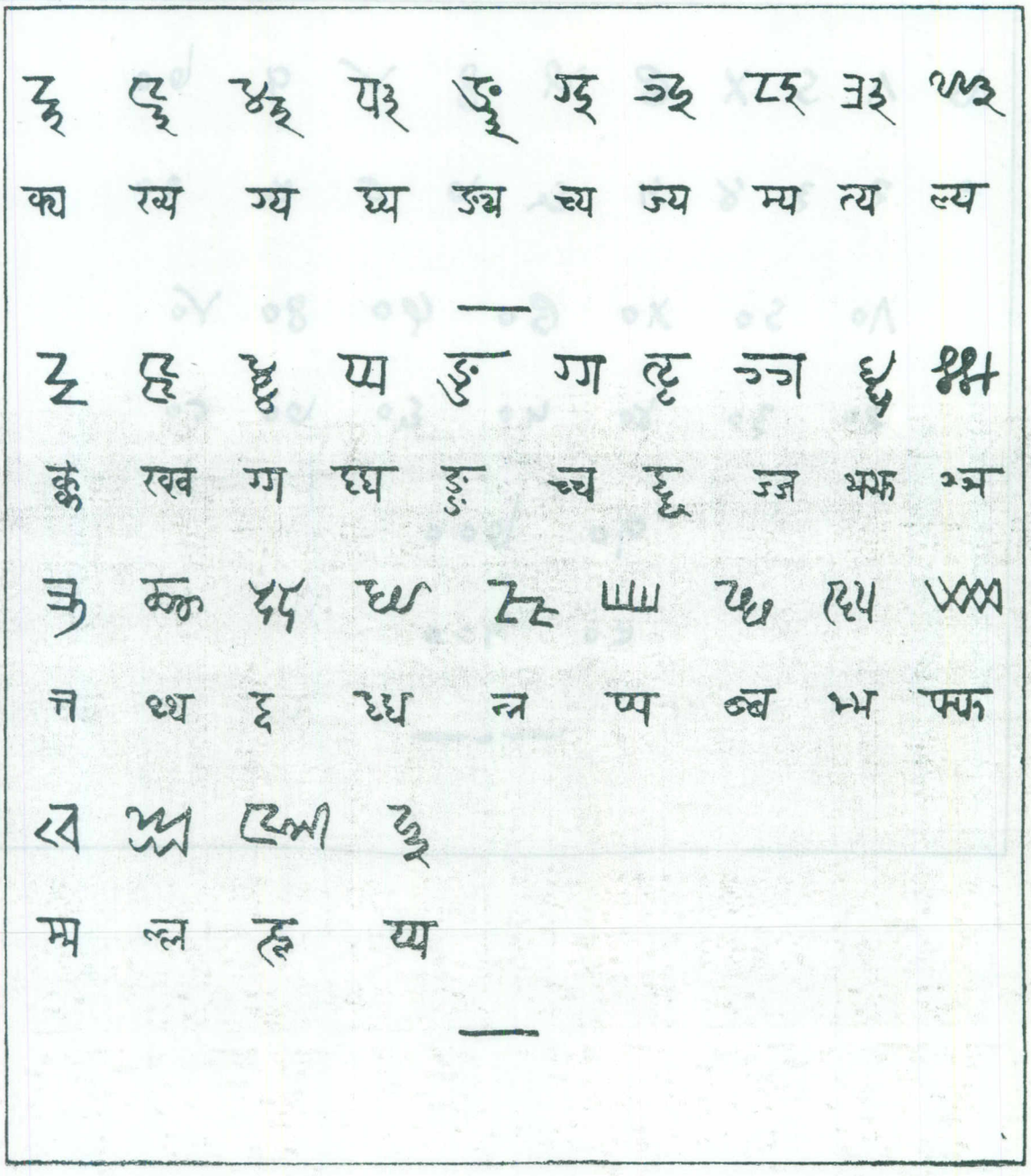
क्क र्य ग्य घ्य ङ्ख च्य ज्य म्य त्य ल्य
ङ्क ख्व ग्ग घ्घ ङ्ङ च्च ट्ट ज्ज झ्झ ञ्ञ
क्क द्द ध्ध ट्ट ड्ड ढ्ढ ण्ण
त्त थ्थ द्द ध्ध न्न प्प ब्ब भ्भ फ्फ
व्व श्श ल्ल ह्ह
म्म ल्ल ह्ह य्य

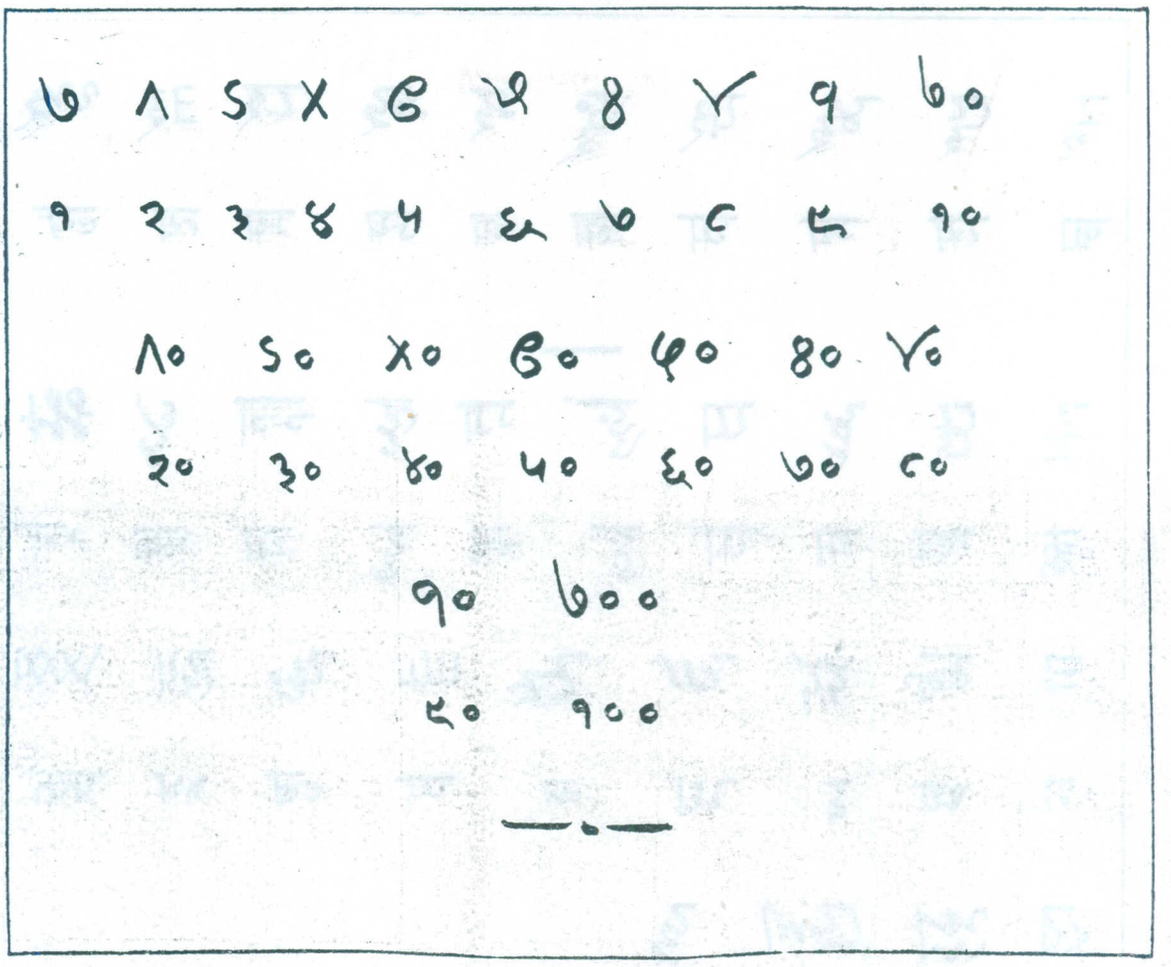
७ ८ ९ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
८० ९० ४० ५० ६० ७० ८०
२० ३० ४० ५० ६० ७० ८०
९० १००
९० १००

# मिथिलाक्षर वर्णमाला

## ( स्वरवर्ण )

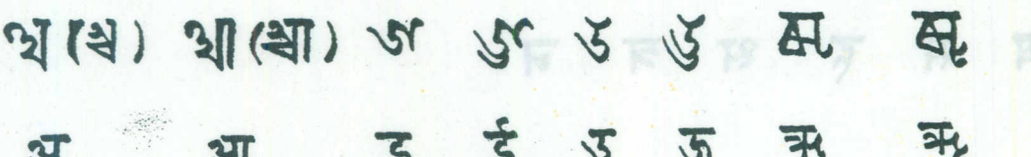

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

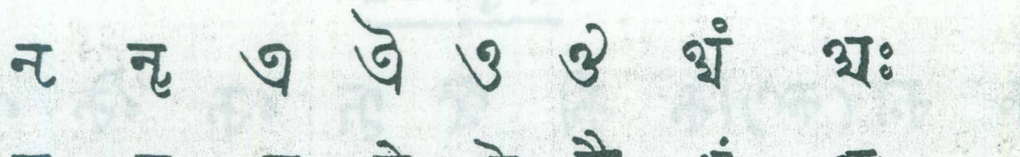

ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

## ( व्यञ्जनवर्ण )

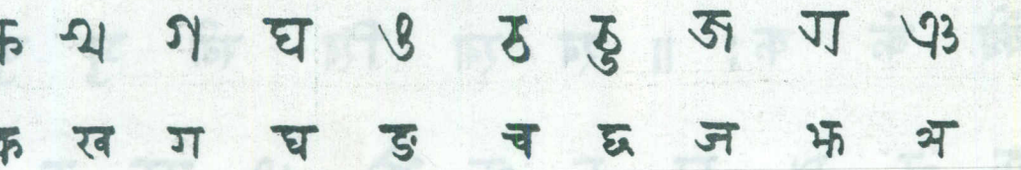

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

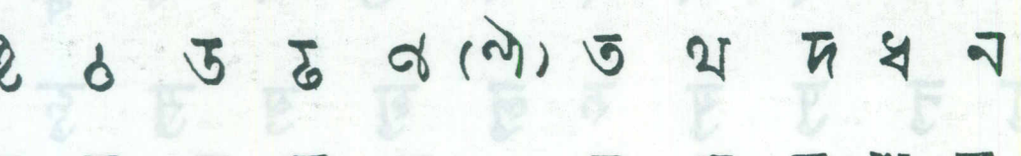

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

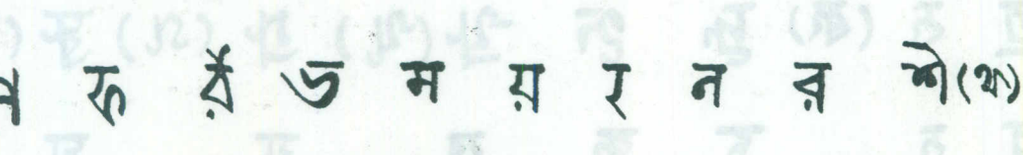

प फ ब भ म य र ल व श

ष स ह क्ष त्र ज्ञ

ष स ह क्ष त्र ज्ञ

## स्वरसंयुक्त व्यञ्जन

क का (कॉ) कि की कु कू के कै को

क का कि की कु कू के कै को

कौ कं कः ॥ ख खा खि खी खु खू

कौ कं कः ॥ ख खा खि खी गु णु

तु थ ष्ठ घ ट्ट थ श्रु श स्व क्र द्र

तु नु पु यु रु लु शु षु सु हु ह

तृ रु (क्र) ट्रु ष्ट्र थ्र (थ्र) ग्र (ग्र) घ्र (घ्र)

तृ रु टू क्रु ख्र गृ घृ

## ( संयुक्ताक्षरवर्ण )

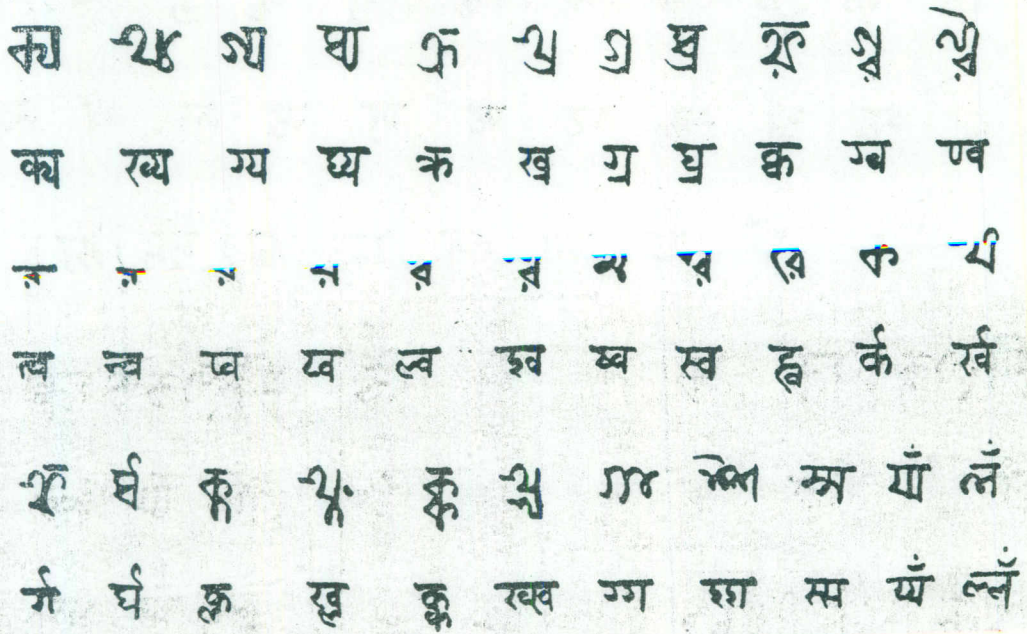

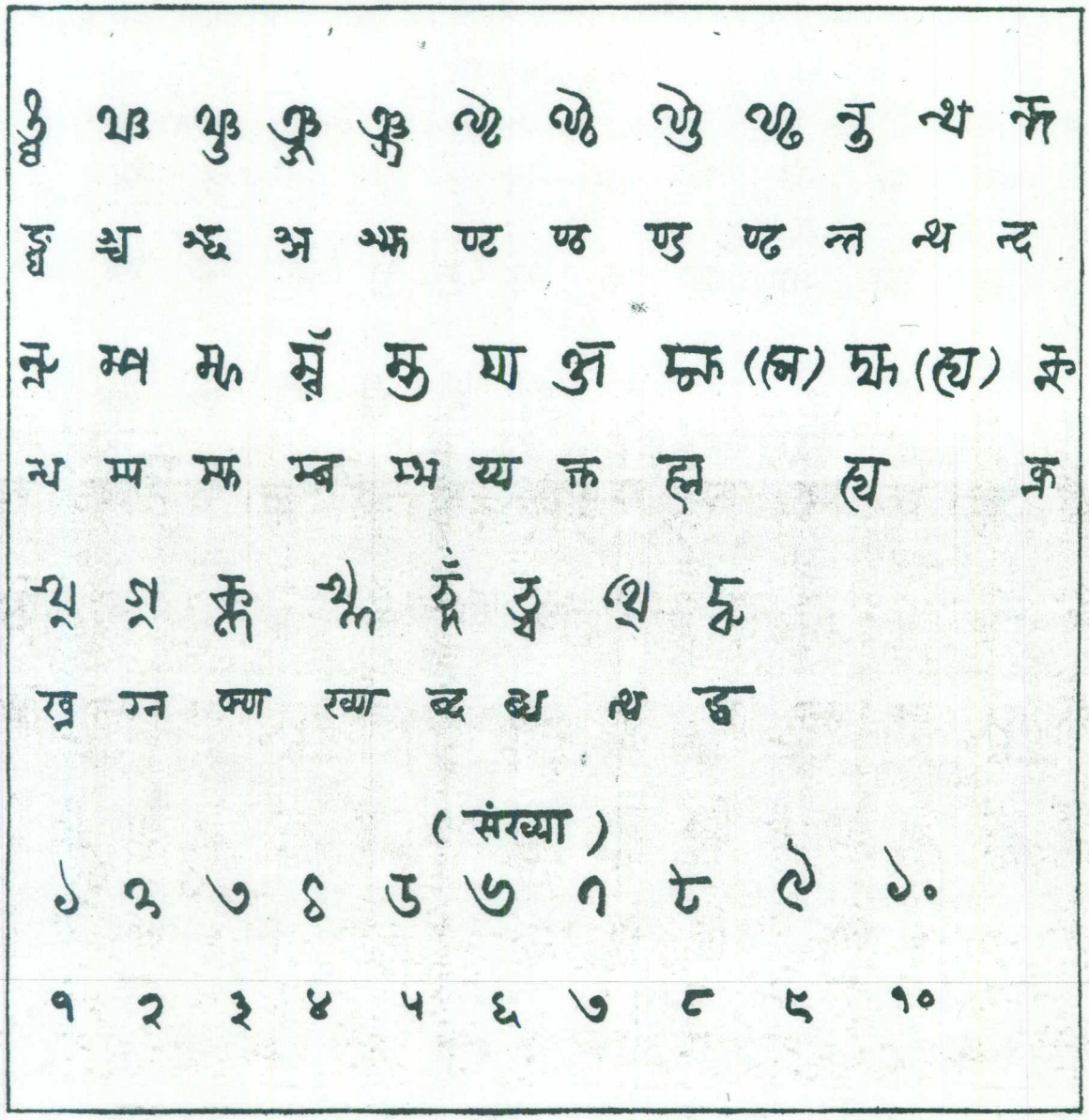
(ल)
(ह्य)
(संख्या)